

श्रीहरिशरणभ्यां नमः
श्रीवाग्भितरजानन्दवार्त्मानः
नीलमाधवस्य दत्तम्

उं विदीरुधयधयी गहावनाडकाय राधकनानागिनमत्रय किस्की धेनि ताका
 न्यामीरुनयानीविडा कानयनदेधिरुल येस्कीमयनलवालही नस्कीय
 नहीनरुन यनदीनरुययमानयन ये येदामदययानि अस्कीमयनल
 यालके नस्कीनययनितानि कमनकना निवाधि कय कायेखेनायोवमीन
 ननरखछेयनी जसयुदनाकायीथ अं गुं धिमाधि येदि कय कायेखेनायो
 ननि मंत्रवेय (अ) यती जसगतहीमंत्रयानि ॥ लालिलालि (अ) दूत्रिहुं गदूग
 मगवि (म) कलकर्म गव्वालिनी यानिरुनयडागुरुवाठकारुदनासायनागकि
 वीनेसात्रियादिन (म) विदकीधनी ॥ ॥

नालमानन कल्याय दिगतांदले ॥ सफजया निवास्तुध वलीवा
 मसमरुमा ॥ कानरवप्रसुयउथूयपू ३१ यानात्रयमनु ॥ उं ३० अम
 यरु ॥ अमपू ३१ ॥

ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॥ अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि
॥ ॥ अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि
॥ ॥ अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि

पूजहि लि (श्रीक॥

अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि
॥ ॥ अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि
॥ ॥ अथ मन्त्रादौ हननं नृस्यं ० लि

[illegible]

म ॥ य ॥ ॐ व क ल य ॥ द्वा वा द म ल ॥ ॥ द द ल ॥ द द ल ॥ ॐ
स व ल ॥ द द व न ल ॥ ॥ ॐ मि द्वा न य ॥ ॥ अ थ वा म य ॥
य ॥ स न न वा मा द म का य न ना वा य म द या क ल द न वि कि न ॥ ॐ
या य ॥ य न म य द ॥ ॐ ग ॥ य स म ना य द ॥ ॐ अ य
स य ल य ल ॥ य ल ॥ य वि स मि ॥ ॥ य ल वि द्वा क क न म न
म ल नि वा ल ॥ अ य न न ग ल ॥ ॥ द ॥ ॐ मि म ल क ॥ य द ॥
ना ॥ उ द म ल न अ का न द ॥ अ न मि द्वा वि द्वा नि वा न ॥ ॐ ३
य म द्वा य द न ल म ॥ ना उ य य वा म न ॥ ल मि वि द्वा नि वा न ॥ ॥
ॐ मि ल ना य स न ॥ वा ल य ॥ ॐ वा ल य न वा य ॥ न म ल दि

गण सुवक्त्रो जलं न विहाय ॥ तस्मान्मलिवृत्तकचका दृक्लिना सह
 जीवं जीनाहतयमसमानीय ॥ तण्डुलवायो वद्विंलीनं विहाय ॥ त
 स्मादनाहतयमादायना सह जीवं विभुश्चक्रसमानीय ॥ तण्डुल
 आकाशवायुलीनं कृत्वा ॥ तस्मादाकाशमन सह जीवं आकाशचक्रसमाह
 त ॥ तण्डुलचक्रसमनसि ॥ आकाशलीनं विहितं ॥ तस्मादाकाशचक्रात्
 नसा सह जीवं नादसमानीय ॥ तण्डुलचक्रमनालीनं विहाय ॥ तस्मा
 दनादिन सह जीवं धनसमानीय ॥ तण्डुलचक्रनादलीनं कृत्वा ॥ तस्माद्व
 निना सह जीवं सहस्रदलकमलसमानीय ॥ तण्डुलचक्राद्विकचक्र
 मधुलम ॥ यत्रिकोष्ठात्तन्निन्दुरूपयनमभिधजीवात्मानं कृ

[illegible]

[illegible]

बग

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

॥ उं मं वे कृष्णाय वसुदाये २ हृदि ॥ उं यं पूरुषात्तु माय वसुधा ये त्वम
 साक्षात् १ द क क क दि ॥ उं वं वलिन पचाये अ सु मा त्म स्यात् १ वामा ॥
 उं लं वला नूजा य वराय नाये मा सा त्म स्यात् १ वाम क क दि ॥ उं दं वलाय
 सु क्राये पदा त्म स्यात् १ द क ॥ उं मं वृष द्वाय संधाय अ क्रा त्मने २
 कदादि वा क ॥ उं वं वृषाय ययुजाये म क्रा त्म स्यात् १ कदादि वाम वा क ॥
 ॥ उं मं हं साय यजाये वां धा त्म स्यात् १ कदादि द ॥ उं दं वना हाय
 निभयै वा धा त्म स्यात् १ कदादि वाम पाद ॥ उं लं विमलाय मा हाये म क्रा
 त्म स्यात् १ मा ॥ उं कं नृ सिंहाय विद्रुगाये कां धा त्म स्यात् १ मख ॥ ॥ न्या
 सस्य धा न ॥ क म वा दि द्या ० म म्मा मा ॥ य क म र व ल स क वा १ म क य

शुक्रा ४

कृष्ण

लु प्रया ॥ निषधु १ सु १ सिमानना १ ॥ वि दू दाम स माना १ ॥ य क जा
 हय वा ह व १ ॥ क म वा दि न र्य न्या सा ॥ न्या स म ल द हि ना ॥ अशु त
 लं र व द र्वा स नि ॥ को य ति मा दि षू ॥ न्ति क म वा दि न्या स १ ॥ ॥ अथ
 श्री कृष्ण दि मा गृ का न्या स १ ॥ ॥ अथ श्री कृष्ण दि मा गृ का न्या स ह्य द किं
 मूर्ति ज व य १ नि नि सि ॥ म य गी रु न्द स १ मख ॥ अर्द्ध ना नी म्भ पा द
 व ना ये १ ॥ हृदि ॥ हं वी जा य १ गु १ ॥ सो म क य १ पा द वा १ ॥ अथ की
 की ल का य १ स वी ॥ म म व म्मा य का मा भा का ॥ य श्री कृष्ण मा गृ का न्या
 स वि नि या ग १ ॥ न म स्का व ॥ ॥ य य म्भ उ ॥ उं दं श्री कृष्ण अं क र वं
 यं दं श्री कृष्ण दया य १ ॥ उं दं श्री कृष्ण वं दं श्री कृष्ण अं क र वं

नमोस्तुते ॥ ॐ क्लीं श्रीं क्लीं उं टं ॐ उं टं धं उं कुं नि सव्ये वषट् ॥ ॐ
 क्लीं श्रीं क्लीं नं पं दं वं तं नं कुं नय नय या य वौषट् ॥ ॐ क्लीं श्रीं
 क्लीं उं वं रुं वं रुं मं डों कुं नय नय या य वौषट् ॥ ॐ क्लीं श्रीं क्लीं अं यं
 नं लं वं मं वं संहं लं रुं अ ४ कु ४ अस्मा यद् ट ॥ अमनक प्रेषत कन्या
 सः ॥ अस्य ध्यानं ॥ वं धू क काने नि रुं रू वि ना क्र मा ले पा म रुं मो व व न दं
 नि ज वा रु द ८ ॥ वि आ ध मि न्द्रु स क ला रु व र्ण वि ने ग म द्वा मि क म
 म नि र्म व पू ना ध्या मि ॥ ॥ गौ न्या सः ॥ ॐ क्लीं श्रीं क्लीं कुं अं श्री क
 ८ ॥ म पू ८ ॥ द नी र्था २ ॥ ल ला ट ॥ ४ कुं अं अ न नं म वि न जा र्था
 २ ॥ मू र्ध न ॥ ४ कुं ४ सुं ४ म म ली र्था २ ॥ द क न ॥ ४ कुं
 ४ ॥ वि मू र्ध न ला ला कि र्था २ ॥ वाम न ॥ ४ उं अ म न म व रुं

[illegible]

मं वक ममाधवी ह्यां अस्तु। स्यां २ ददादिदक हस्तु यर्थे नं ॥ अथं
८७० गं वा नू ही ह्यां २ ददादि वाम हस्तु यर्थे नं ॥ अथं हृ ग्वी म वा य
वी ह्यां मुका स्यां २ ददादि दक वा दयर्थे नं ॥ अथं न कुली म न का वि
दा वि ही ह्यां वा धम लि का ह्यां २ ददादि वाम वा दयर्थे नं ॥ अलं मि व म
स हजा ह्यां जि वा ल ह्यां २ ददादि म वा यर्थे नं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ४
नं स व रु ध्या पि नी ह्यां प न मा न ह्यां २ सु धी र्मि ॥ ० ॥ न स्य धा नं ॥ न
रु डा ४ सु ता व का २ धृ ग मूल क वा ल का ४ म क था रु द वी ० ह्रा ४ सि
र ना २ रु धा वि ग्र हा ४ ॥ व की ल्य ल क वा ला ह्रा ४ सु ल क न क वा मू जा ४
मी श्री क र्मा दि मा तृ का न्या स ४ ॥ ० ॥ अथ धा न न्या स ४ ॥ ॐ ह्रीं अ

नि धां सु धी र्मि नं अ मु का ह्यां २ ॥ ध धा व ह्रीं प न व म न रु नी ह्यां २ ॥ धा व
न न व ह्रीं वा लि नी मि र्वा ये व ष ड् ॥ ॐ ह्रीं ४ सु धी र्मि नं ४ ह्रीं धि ग ल क
ध धा य ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं ४ श्री ति वा य ह्रीं न न व वा य वी ष ड् ॥ ॐ नम सु रु द नू
थ ड् ४ म हा वा मु य ता स्त्रा या स्त्रा य रु ड् ॥ ह्रीं ह्रीं ० ॥ म ना य उ र्ध्व व का य
नम ४ ॥ ह्रीं न ल्य रु धा य पू र्व व का य २ ॥ ह्रीं व अ धा वा य द क्षि ण व
का य २ ॥ ह्रीं व वाम द वा य उ र्ध्व व का य २ ॥ ह्रीं लं सु धा जा ता य य
मि म व का य २ ॥ पू र्व क व ष ड् इ न्या स ४ ॥ ॥ ग ता वी ष ड् न्या स ४ ॥ ॐ
ह्रीं ४ ह न दी का य अ स्त्रा य रु ड् ॥ ॐ ह्रीं ४ प वा य व सु नू वा य रु
द या य २ ॥ ह्रीं ४ म हा व ल य न क मा य मि व स स्त्रा ह ॥ ॐ ह्रीं ४ न
मा ना ना य धा य सि धि ४ द्वि य दा यि न मि र्वा ये २ ॥ ॐ ह्रीं ४ वि द्म

ह अगुलनिर्जित समनाय धिषनास न कववाय दू ॥ ॐ ह्रीं स ४ स्वाहा
स्वकीयमहा र्धसनाय न गत या य वीष दू ॥ ॐ ह्रीं स ४ ह न दी का य व
क्राय रु दू ॥ ॥ ततामृष्ट ॐ य न्या स ४ ॥ ॐ ह्रीं स ४ ह द या दि क न व
उ न न्या स ४ ॥ ॥ अथ या य क न्या स ४ ॥ ॐ नम रु क्का धू रू ता य
शानि नि इ धू ता त्मने । र गु मू कि व य ४ क्का य । हा सि ता क्का य
म रु व ॥ स वी हं वि का म् ॥ ॐ ति न्या स क्का य ॥ ॥ अथागु
या य क्का य न ॥ ह मो ज ले न या इः गु गि का । ध य दू ध वृ ल च गु
न वी वि लि र्वा ॥ ग य म धु ले यू ज न ॥ डी अ य ना दि म क्का दि यो २ ॥
ॐ ति म रु ध वि या दि का यि काल्य म धु ले क्का य यू ज य ॥ ॐ व र्क
म व

म धु ला य धू मा दि द म क लान्मने श्री म क्का व ना ना य ध या गा स न प्य
अग्ने मु ग्गु लू द ला । रु ति ति म रु ध न र्ध य काल्य म् नि न्धू य य ॥
ॐ नम ४ ॐ ति म रु ध व न्ध न सि दू ना दि रि ४ र्ध य ॥ श्री म क्का व ना ना य ध य
म र्ध यार्थ क्का य या मि नम ४ ॥ वि या दि का यी क्का य यू ज य ॥ ॐ हं ह
श्री म धु ला य न वि न्या दि द्वा द म क ला त्मने श्री म क्का व ना ना य ध या गा य
नम ४ ॥ ॥ श्री म धु ला य म रु ध ज ल पू न य ॥ ग क्का ल यू ज य ॥ ॐ मं साम
म धु ला य अ मृ ता दि धा ३ म क ला त्मने श्री म क्का व ना ना य ध या गा मृ ता य
२ ॥ ॥ म्म नि नी मृ द या क्का य ॥ मू ले न वि का ज य ॥ वा गु म ॥ ॐ का व ग
हं व द्वा र्ध वि लि र्वा ॥ ग ह व म म न व र्ध ति म रु ध कौ अ क्का म मृ द या गी

[illegible][illegible]

यद्यभय २॥ ॥ तवावध पूजा यमाङ्गद निवेदि ॥ ॐ ति यार्थ ॥ ताम
सूयण पूजन ॥ ॐ अन ना वासुदवा ह्य २॥ ॐ भक्ति सु सा ह्य २॥
मिवा रुम म कर्षे धा ह्य २॥ श्री ल कर्ण शा ह्य २॥ ॐ ल क न ड य शुभा
२॥ ॐ स व स ता मि मू लि ह्य २॥ श्री क ष्ठ अ नि रू द्वा ह्य २॥ ॐ व
मे र व धि ह्य २॥ पू र्वा दि ण्णी भ ना र्क ॥ ॥ यथा य पू ज न ॥ ॐ मि भू
र्वा ह्य २॥ ॐ अ रु मा ला च का ह्य २॥ ॐ व न ग दा ह्य २॥ ॐ
य म मा ह्य २॥ ॐ मृ म मि क को मु हा ह्य २॥ ॐ र व द्वा ड मू ग ला
॥ ॐ क पा ल र व भो ह्य २॥ ॐ उ म र व न मा ला ह्य २॥ पू र्वा दि ण्णी
॥ व पु ष्का य पू ज न ॥ ॐ नि वृ त्ति ग ष्ठ भ ह्य २॥ अ र्जु न को ष्ठ

ह्य २॥ ने र्म ह्य ॥ ॐ वि द्या रू र्म ह्य २ वा य य ॥ ॐ
॥ ह्य २॥ ॐ भि भ ना ॥ ॥ द्वा प्र पू ज न ॥ ॐ लू ण्द्र ला य २॥ न अ
मा य २॥ कु ने र्म त य २॥ वू व रू द्वा य २॥ यू वा य व २॥ हू रू
२॥ दू ण्णी भ ना य २॥ अ अ भे म ॥ ॐ उ द्वा य २॥ ॥ द्वा न को ल
ने ॥ ॐ त नि ज या ह्य २॥ पू र्वा द क ॥ ॥ ॐ म हा का ल वि ज या ह्य २
वै रा म ॥ ॐ हू जि व ह्वा ह्य २॥ द कि ष्ठ द्वा न द क ॥ ॥ ॐ म हा य ति पु र
ह्य २॥ द कि ष्ठ द्वा न व मि ॥ ॐ हू व ष ण ह्य २॥ य मि म द क ॥ ॐ सु न दि
ह्य २॥ य मि म व मि ॥ ॥ ॐ द वी वि षे त्म ना ह्य २॥ उ ल न द क ॥ ॥ ॐ
व हू के य या ला ह्य २॥ उ ल न व मि ॥ ॐ मि स पू र्म मू ड न द म य ॥ ॥

११५

हरिहरस्तोत्र

शंकरनारायणपूजापद्योत

स्वस्ति श्रीगणपतियामंत्रः॥ नमः॥ राग॥ विष्णुराजतु॥ मात

पञ्चमस्तव॥ ००६ पौषशुक्लपरेजयध्वकुङ्कुश्रीवाग्यतिराजानन्दउपाध्यायान्तःनि
वर्तव्येन श्रीशंकरनागरायणाय पूजापद्धतिदानवियाशुभम्॥ ० ॥

ॐ नमः ॥ उं सका ॥ आसनाय २ ॥ ध्यानं ॥ सुप्रसूतिरथा दूढं ॥ सा ॥ न
 ॥ उं ॥ उवादा ॥ डिमव न्युक् ॥ यम नाग समुहं ॥ ७ कास्यैव नि
 ॥ न का ॥ विम निरुष धी ॥ न के यम का नाम्ना ॥ ज ॥ हा ला था फे दि
 ॥ न ॥ ॥ अलि ॥ उं ॥ डा ॥ डा ॥ सु ॥ सु ॥ य ॥ २ ॥ ३ ॥ ॥ म ॥ य ॥ नि ॥ पू ॥ ज ॥ न ॥
 ॥ सु ॥ सा ॥ सु ॥ ना ॥ य ॥ २ ॥ ॥ ध्यानं ॥ चतुर्भुजं ॥ वा ॥ व ॥ ध ॥ ॥ नि ॥ न ॥ मा ॥ व ॥ वा ॥ द ॥ नी ॥ अ
 ॥ सा ॥ हा ॥ वि ॥ द ॥ न ॥ च ॥ द ॥ कि ॥ ॥ ध ॥ वि ॥ ध ॥ तं ॥ क ॥ ने ॥ वा ॥ म ॥ य ॥ न ॥ मु ॥ ह ॥ र्म ॥ व ॥ ल ॥ पु ॥ या
 ॥ ॥ ता ॥ ४ ॥ य ॥ न ॥ ना ॥ म ॥ रु ॥ व ॥ ध ॥ र्म ॥ सु ॥ क ॥ ॥ ध ॥ य ॥ मा ॥ न ॥ ह ॥ ल ॥ पु ॥ द ॥ ॥ ॥ अ ॥ लि ॥ ॥ उं ॥
 ॥ म ॥ ग ॥ ॥ य ॥ ॥ ग ॥ ॥ म ॥ य ॥ त ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ॥ ॥ म ॥ हा ॥ मे ॥ नी ॥ पू ॥ ज ॥ न ॥ ॥ उं ॥ मि ॥ हा ॥ सु ॥ ना ॥ य ॥
 २ ॥ ध्यानं ॥ इ ॥ वा ॥ ॥ इ ॥ ल ॥ नि ॥ हा ॥ द ॥ वा ॥ ॥ म ॥ हा ॥ मे ॥ नी ॥ मा ॥ हा ॥ इ ॥ ला ॥ दि ॥ तु

जा ॥ म ॥ क ॥ व ॥ क ॥ र्वा ॥ च ॥ ना ॥ ला ॥ त्य ॥ ल ॥ द ॥ ल ॥ रु ॥ ध ॥ ॥ व ॥ व ॥ द ॥ त्य ॥ ल ॥ ह ॥ र्म ॥ च ॥ यो ॥ व ॥ ना
 ॥ म ॥ रु ॥ ध ॥ ध ॥ ॥ व ॥ त ॥ र ॥ म ॥ वि ॥ रु ॥ ध ॥ र्म ॥ ॥ दि ॥ य ॥ व ॥ सु ॥ वि ॥ ध ॥ वि ॥ ध ॥ ॥ य ॥ ध ॥ म ॥
 ॥ न ॥ सि ॥ ता ॥ म ॥ व ॥ न ॥ ॥ वि ॥ म ॥ व ॥ य ॥ ॥ वा ॥ वि ॥ ध ॥ ॥ वि ॥ ला ॥ क ॥ मा ॥ त ॥ र ॥ रु ॥ ध ॥ ॥ ज ॥ ग ॥ दा
 ॥ न ॥ ल ॥ का ॥ वि ॥ ध ॥ ॥ ॥ अ ॥ लि ॥ ॥ उं ॥ डा ॥ डा ॥ म ॥ हा ॥ मे ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ता ॥ ४
 ॥ मे ॥ व ॥ य ॥ न ॥ ॥ उं ॥ व ॥ सा ॥ सु ॥ ना ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ॥ ध्यानं ॥ य ॥ व ॥ क ॥ द ॥ म ॥ रु ॥ ज ॥ वि ॥ य ॥ व
 ॥ य ॥ ना ॥ इ ॥ ला ॥ ॥ य ॥ त ॥ न ॥ के ॥ व ॥ रु ॥ ध ॥ ॥ यो ॥ त ॥ व ॥ रु ॥ ठ ॥ का ॥ व ॥ म ॥ ॥ क ॥ य ॥ द ॥ वा ॥ ल
 ॥ द ॥ ह ॥ ॥ य ॥ ता ॥ ह ॥ सु ॥ व ॥ रु ॥ ध ॥ ॥ म ॥ ल ॥ द ॥ म ॥ रु ॥ के ॥ य ॥ ध ॥ ॥ म ॥ कि ॥ मा ॥ ल ॥ वि ॥ द
 ॥ य ॥ ॥ ह ॥ य ॥ व ॥ व ॥ न ॥ द ॥ ॥ वी ॥ जी ॥ व ॥ द ॥ म ॥ न ॥ य ॥ ॥ म ॥ हा ॥ त ॥ उ ॥ म ॥ हा ॥ न ॥

चन्दनाः कृतपूर्यदत्ता ॥ ॐ गजध्वनिमन्त्रमात ४ स्वाहा दी ० ये २ ॥ ॐ ति
 ३ ॥ वामहस्तेन च दक्षबादयित्वा ॥ मूलमर्कं ध्रुवक ० ॐ दध्रुवस्य
 यामिनेम ४ ॥ दक्षस्य नाम्ना पूढ स्यात् ॥ ॥ चर्वदीर्घ ॥ दक्षस्य ननु समी
 ध ॥ ॥ अथनेव दश ॥ धनी ॥ श्रीकवेना नायक मय गुण सामान्या ॥ दक्षिक
 नपाकने ॥ चन्दनाः कृतपूर्यदत्ता ॥ चक्रमूढया श्री कृष्णाय ० ॥ यं १०
 वं १० वं १० अनेन जप्या ॥ वं १० नूमुर्द्धादनीय ० ॥ दू ० अवगुण ० ॥ रुढ
 तावज्जय ॥ कृतिकाव ॥ ॐ ति ॥ ध ॥ ॥ अथमनेन जलदत्ता ॥ मूलमर्कं
 धनीकवेना नायक मय गुण सामान्या ॥ दक्षिक
 य ० ॥ ॥ ताता अममूढया यश्च अर्द्धद ० ॥ ॐ या धाय स्वाह ति ० ॥ अ
 गुलीति ४ ॥ पूनवाचमने ॥ ॐ अमृता लवण मही यन्वा हा ॥ ॥ ताता नाना
 स कान्न हल तां वृत्तं गुण हर्षी नमस्व गुडिक प्युला नितादिकं समर्प्य

[illegible]

ॐ अथवाचद ॥ ॐ अहं रथागा ॥ वगुः स्वति ॥ ॐ स्वस्ति न नन्दति ॥
 वृत्ति ॥ ॐ तज्जामि ॥ ॐ याः रुत्तिनी ॥ ॐ अत्रयार्थ ॥ ॐ नमः य धृति यव ॥ ॐ मन
 ॥ ॥ लाजा मृत्तिना पुतिष्ठ ॥ ॥ जयार्थ माला पूजनं ॥ ॥ यो रुध र्वदना
 दियु र्वा दत्ता पूजनं ॥ ॐ मालाये म नु सिद्धि दाय २ ॥ ३ ॥ मूलन जाप १००
 ॥ जय समर्थ धीरु ॥ ॐ गुप्ता ति गुप्ति ॥ जयार्थ मालाये म जयार्थ
 च ॥ जय समर्थ यामि ॥ जय समर्थ धन मूर्ता दर्मार्थ ७ ॥ ॥ विष्णु मूर्ता
 च ॥ ॥ श्री रविवरुणदाय म ॥ वधू वी वत्स को मुह ॥ वनमाला मत्रु जा र्वा ॥ का
 म मूर्ता द न स्मृ ता ४ ॥ ॥ निव मूर्ता ॥ लिङ्ग यानि ति मूलारवा वना ॥ १ ॥

[illegible]

वनं । सर्वोत्तमं दीप्यं वन्द्यं ४ सुविनं ॥ ॥ नागान्
यता क्रियः सुधुयैव नारायणाय विनाजनमस्तु ह्यं विनता
नन्दवन्दनं ॥ ॥ जिनं गच्छुल्लोकात् नमस्तु विश्वहावेन । सर्व
ज्ञेयं नमस्तु महापूज्यपूर्वज ॥ विष्णुं चन्द्रनिहं वयू ४ कमल
जाये कृष्णाय नमस्तु ॥ या फलं हवस्तु न वल विलस्तु बाहनाल ह्यं
विष्णुं वन्द्यं दयैव नमस्तु मयै कृष्णं नमस्तु गदां नमस्तु वन्द्यं नि
विन्दमि तां दिव्यां चन्द्रियं नां नि ॥ ॥ विष्णुं नमस्तु नमस्तु नमस्तु
नायः सुलोले विन्दे वनमाया लोचनाय । पीताम्बराय नमस्तु कुरु
नाममायः स्वस्ते नमस्तु वन्द्यं नमस्तु ॥ ॥ जगत्पूज्यं महागजं

महासूर्यं महावलीं अकाशं प्रणमि विन्दे तां श्रीं चन्द्रमायाम् ॥ ॥ तम
नमस्तु महान् नमस्तु महान् नमस्तु महान् नमस्तु महान् नमस्तु महान् नमस्तु
मनामयं ॥ ॥ सर्वमज्ञं लमाङ्गल्यं निर्वसुर्वार्थसाधिकं । नमस्तु ग्रामकं लो
निः नारायणं निनमांस्तु ॥ ॥ निर्वसुर्वार्थसाधिकं । लोकां नमस्तु हकावर्कं ॥
निवमांस्तु प्रनतानं । प्रणमामि सदा निर्वं ॥ ॥ नमस्तु वनमस्तु ह्यं कुरु
वनमस्तु नमस्तु । नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
नाम् ॥ ॥ दयैव नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

[illegible]

अग्निविष्णुविष्णु-वक्रिवयथारुव७। रुडमजिम्बि विद्या विष्णुसा
मासकः स्मृतः ॥ १० ॥ अग्नीषामात्मकं येवः जगत्स्वावनजम्मी। कलनि
वायकलोको। स्त्वाविनस्यवनस्यव॥ ११ ॥ जगत् १२ गुरुकलोमीः प्रहविष्णु
महम्वेनो। कलुकावधकलोनीः कलुकावधकोनेको॥ १२ ॥ हतक
यहोदोदोः नानायधमहम्वेनो। उत्तमवयवकोनीः द्वावतोवयव
१३ ॥ १३ ॥ जगत् १४ यालवावताः वताहृदि कनावहो। उत्तमवयव
निः। एनिवा निहृजनिवे॥ १४ ॥ उत्तमवयवतर्गुर्गः कथितं तं यिता
महा। यः श्वनीय ०० निर्यः यः श्वनीय ०० यानेव ॥ १५ ॥ प्राप्ताति यनमेस्व
विष्णु रुड पुसादतः ॥ ददोह निहो। ह्यो। वक्रधसहस्रगो ॥ १६ ॥

त्वं येन सखा । त्वं विशाख विधं त्वं वः त्वं वः सर्वं मम प्रहृष्टम् ॥ कनक नक्षत्रं
 वा कर्म वा कायार्जवाः ॥ नृप ननय ननं वामानसं वा । येनार्धं । विहितं मवि
 दितं वा सर्वं मत्तं ॥ कर्मथा । जय जय कनूत्तम् । श्वे श्री महा देव विष्णु ॥ पाप
 दयाय कर्मो हं वाय त्मापाय सकृद्वः । जादि मां देव देव । मा । सर्वं पाप ह
 मारुत ॥ यथा वावति ॥ अर्जुनं वादि ॥ कर्तन ॥ ॥ वाह ह्यसि हं नानुत्तम्
 निनसाव वसाधिया । यथा ज्ञक ॥ यथा मस्तु । विद्वद्भिः क्रियते सदा ॥ नमस्त
 नं कृत्वा । अर्जुनं विद्वद्भिः कर्मास्तुति ॥ अर्जुनं विद्वद्भिः कर्मास्तुति ॥ अर्जुनं विद्वद्भिः कर्मास्तुति ॥
 त्वं मम विद्वत्तं । यथा दत्तं प्रसीद त्वं । कर्मसु च कर्मसु च ॥ ॥ अर्जुनं विद्वद्भिः कर्मास्तुति ॥
 ॥ वलि धय ॥ सीताने मूढया ॥ देव त्वं सुहृदिवि सक्तुर्न ॥ पूननं वसं ह्यनम
 दया । त्वं विनिमाल्य पूषा गृहीत्वा । निमाल्य वानेन दद्यात् ॥ मस्तु ॥ ॐ कर्मास्तुति ॥

को पूरिबद्धु यत्र विष्वक् नार्यां २॥ केतन ॥ हर्षप्रकाशवमनं ॥ हृथ
सा की जल कलया पूषा कर्तृ क्रिये ७ हृथो य ॥ त्वानं द्याया द्वि र्यां क्व काय
॥ गति श्री गं कन ना ना य धी पूजा य हति समाका ॥ ३॥ ॥

अथ जंभवीयूजः ॥ इयं स्नानादिवन्दनं सिंहं दृष्ट्वि यजुर्मकधुवताका
दिष्ठायाव ॥ ॥ अथ मनयूजः वाग्निनसूक्तं घृताय अद्यादिना ॥ गुरुनम
स्तुते ॥ दिग्वन्दनं ॥ किष्टिश्चिद्विष्णोर्का कृतायतिमर्तुन ॥ ॥ तताहतायसावही ॥
नेत्रयस्य नुयेरुताः ॥ तिमर्तु ॥ ॥ वतुदिकुपूजनी ॥ तं जलपतय ॥ दकि
॥ ॥ तं वदकाय ॥ यन्मिभ ॥ तं तुनव ॥ ॥ उतुन ॥ ॥ तं जम ॥ दकि ॥ अथ ॥
रुथाहनी ॥ तं जयमाहनाय ॥ तं यजसनाय ॥ तं जकृन्माहनाय ॥ किनिश्

विष्णुकाक्षे नमोऽः अस्माय हट् ॥ लाहल ॥ त्रं हूं हट् वज्र वं जल स्वाहा ॥
त्रं जवनम कल कलमवन क्रीं क्रीं हट् स्वाहा ॥ देम दान नूनं ॥ ॥
तगा ग्रास ॥ त्रं जम ४ अस्माय हट् ॥ त्रं जम ४ दया यनम ४ ॥ ॐ स्वादि
कनय ठं ग न्या ली स ॥ ॥ जल पाप पूज ली न ॥ ॐ जहं २ जल पाप य २ ॥
क्रं हट् दया दि ॥ आवाहनादि धेनू मू हा ॥ मययी ॥ त्रं ज वं ज मं कानिधी
विमहं नहामाट काधीमहि ॥ तनो ममि पुनद या ॥ ॥ अर्घ्य पात्र साधनी ॥
आवाह ॥ हृ पृथ्विका सुनी ॥ क्रं हट् दया दि वज्र ॥ न पूजा ॥ चक्र ॥ तद्वयनि
मं कश्चनीया ग्रासनाय २ ॥ तत ४ पात्र पुनलन ॥ त्रं ज हं २ पात्र पुनलय २ हूं
हट् स्वाहा ॥ धूप य ॥ हूं क्रीं क्रीं हट् स्वाहा ॥ पात्रम ॥ ॐ त्रि का धं विलिख्य
॥ त्रि का धम ॥ ॐ नुं कारं विलिख्य ॥ चको य निरुं का य य ॥ ग्राज हूं मनी पात्र

स्वययामि ॥ वं वा हूं मं वं वजीर मनु धानाया ॥ त्रं ज हूं हूं हूं हूं हूं ज हूं म
नी पात्रमात्रा य यामि नम ४ ॥ ॥ अस्मि हूं न क ॥ क वचन व मुष्ट न ॥ न उना ॥
मृती कृत्य ॥ तगा ॥ आन विर्वि तय ॥ ॥ तत ४ पात्र पुनय ॥ मू
लम कुं ॥ त्रं ज हं २ पात्र पुनय २ हूं २ पात्र य विर्वि कृ नू २ स्वा हा ॥ त्रं ज हूं हूं हूं हूं हूं
धुनि ॥ तत ४ मि कूट मू उ या त्रि का धं विलिख्य ॥ क्रं क्रं क्रं ॥ ॐ त्रि म कुं ॥ म
॥ ॐ को न वं च पु धं व न समा लिख्य ॥ त नम ॥ ॐ श्रीं को न विलिख्य ॥ तत ४ म
पूजनं मनु ॥ त्रं ज क्रं क्रं श्रीं ज के मनी विवृ नम ४ ॥ ॥ धानी ॥ ला को न स
नित्य कवी ॥ सिद्ध ग्राह ॥ आहिता ॥ अस्मि द मनु जा की धुं सु विलि का न
हृ त्रि ॥ को नो द मथ ना हृ ता ॥ मलि द वनि मा ॥ कुं ॥ त्रं ज हं २ मं कश्च
नी म किं हृ ता य हं २ ॥ श्री म न्द हं न वा य ग्रा य य ॥ लि मू हं य २ ॥ आवाह

नादयानिमूला ॥ ॥ गगनरुत छदि । कहु पम डी वहु ॥ त्रं ऊं श्रीं ऊं सों सों
ऊं श्रीं डीं त्रं ॥ हूं । आ धा व ॥ ह्रीं । लिं ग ॥ हूं । ना ही ॥ हूं । हृदि ॥ ह्रीं
का ॥ ॥ ४८ ललाट ॥ त्रं जहं हे आत्मयाप डु दना यर ॥ त्रं चन्द न
२ ॥ डी अरु न ॥ श्री सिन्दूर २ ॥ हूं मा हनी २ ॥ ह्रीं यूय २ ॥ ॥ धन मालि
नी सुर्षय ॥ ०० ॥ यं व वलि ॥ विन्दु गयी ॥ ॥ श्री हं व की सुर्ष ॥ ॥ अवा ड
॥ त्रिवलि यूजन ॥ ॥ गगन मूल दवी यूजा का नयु ॥ आस न आधु नादि
॥ ॥ य आसना ये २ ॥ सिं हासना ये २ ॥ वृषासना ये २ ॥ गज गसना ये २ ॥
आन ॥ वन्ये क यूय संका सों । त्रिनगी पं व वे कि की ॥ रुजाद म ॥ ४८ ॥ गग
आं । ना गग ह व ध हू पिगी । अरु या विन्दु का ईव । चक्र मं र्व व धा नि

ह २
ह्रीं ॥ कलु वी सु मजा सु व ॥ उम रू र व द्वा ड म व व ॥ त्रि मूल व व द च व
द धा दि रु वाम या ४ । सिं व म य नी धा ना । हा जाल का ल मे छि ती ॥ उ ड
म ल न सूर्य तु । च छु का पा लि नी मूर वी ॥ गफ ह म प र्ण धो र्ण । पूर्वु मी ति
य नि यु ती । नी ला स्य न द ला हा सी । ह न सि धि लु द क्रि ॥ ॥ हूं । क्रु म डू मि र्म
को र्ण । म हा ल मी तु वाम क । उ मा रु ग द ती । स्या मी । य ग्नि म तु य व सि ती ॥
अ र्ध डी । क ल य क्ति र्म । यं गी रू पा सु वाम ता ४ । लि भा मा ला य नी ता डी । म
ऊ न द य व लु ली ॥ मूर वी डी वाम न ग धा । म र्म र्म र्म क र्ण धा नि धी ॥ ॥ डी
ना दा कि म हा ये डी । वि श्वी य व स म नि ती । का ला नि र ड मा च क्र । ता छु व
न श व लि ती । अ कि र्ण नी म मा धा य । सर्व काम ह ल य मी ॥ ॥ त्रं ग मा

ओं जूं जें ओं जूं ४ जूं वलु मङ्क श्वर्ये धन पूषी २॥ आवाहन स्थापन सन्नि
 धान से निनाधन वि॥ अरव गुष्ठन दि ग्व न्वेन मंडा ॥ वाद्यावमनी यस्मान्
 शलि स्नान विल यन ना कृत सिंदूर पूषी २॥ ॥ ग्रा॥ अलि॥ उं जं उं क्रीं
 पीं वूं हंगवती जुं हं हं हं वलु मङ्क न पालि जुं जूं जूं जयच वलु
 मङ्क श्वर्ये नमः ४ स्वाहा ॥ ३॥ वलि॥ उं जं उं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं पीं वूं ह
 गवती आनु न्द हं ववा यं वलु मङ्क लिली जूं जूं जूं जयच वलु
 मङ्क श्वरी लु लु लु लु नमः ४ स्वाहा
 ॥ वलि॥ ॥ दद्याद किं च ॥ एतद्वनसिद्धि
 सोऽपि पूनसुंदरी मङ्क वीर्य श्वरी देवी
 पूजन ॥ उं क्रीं

श्री आदिपूजा किं दद्यौ पादकी पूजयामि नमः ॥ उं क्रीं सोऽपि पूनसुंदरी
 श्री वाग्वोदवी श्री आबु मङ्क श्वरी पाप ॥ उं क्रीं सोऽपि पूनसुंदरी
 काम श्वरी श्री वूं वूं द मङ्क श्वरी पाप ॥ वलि ॥ ॥ तत्ता दद्यावामसु
 लमहाल श्री पूजा ॥ उं १ अद्याव अमाय व नद विमल गाम
 हाल श्री विज्ञेयापू ॥ उं मं वं हं हं कं श्री मं डं गामहाल श्री दद्यौ
 वलि ॥ ॥ दद्यापश्चिमहाल पूजा ॥ उं जहं श्री ए ॥ मङ्क श्वरी यश्व म
 किं हृदि ता य हं हं गी उमा मह श्वरी यश्व मङ्क श्वरी पाप ॥ वलि ॥ ॥ धर्मा धून काव म
 लम कुन अद्याव वज्र बती मी नः पूजा ॥ वलि ॥ ॥ अं कं श्वरी या गम यश्व म
 पूजन ॥ उं ज वलु मङ्क श्वरी विमल महा मा गका यश्व महि ततो देवी

महामायाः कर्तुं देवैर्न कृतं मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ माहकावि
जय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्रिया ॥ उद्धृष्टं हिं ॥ मंजु कर्मा ॥ उद्धृष्टं मर्मा ॥ माहामाया ॥
श्रीसंवत्सरा ॥ कृमा सुमि ॥ ॐ ह्रीं क्रियादिस्तु ॥ अग्नयः ॥ दक्षिण ॥ ॥
यन्मया ॥ साकिन लोकीन ॥ विर्कं द्याये ॥ समयं क्रमा ॥ दवाभीष्टीद ॥ स्नानकृत्वा
यन्यासत्रिकायाव ॥ ॐ ह्रीं लोकादाय ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ वलि ॥ धमय ॥
आरमन ॥ ॐ ह्रीं नमः क्रियाय ॥ सुकताको कायाव धमश्चतस्रान कायाव
यजमाना ॥ वृद्धिदिय ॥ ॐ ह्रीं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय ॥ विविधसमा
का ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ अथ मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
नमो नमः ॥ न्यास आसनं आसनं ॥ मृषासनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ
मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ मूलमा

दकवालिनी ॥ गणधिनार्ज मूलं ॥ कर्मसिद्धिपुत्राय नमः ॥ श्रियं गणधिनार्ज
ददं सर्वविघ्ननिवारकं ॥ ॐ ह्रीं गणधिनार्ज नमः ॥ ॐ ह्रीं गणधिनार्ज नमः
नीयं चन्दनसिद्धिदना ॥ कृतं वृषीदेवा ॥ ॥ अथ ॥ अलि ॥ ॐ ह्रीं गणधिनार्ज नमः
ॐ गणधिनार्ज नमः ॥ अलि वृषीनमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ वृद्धिदिय ॥ मयि
॥ लम्बादनाय विमलः वक्रपुष्पं यथीमहिः ॥ तन्नाद निपुषाद या ॥ वलि
मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ मूलमा
ॐ नमो नमः ॥ मन्त्रिक हर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ मूलमा
ति ॥ ॥ अथ मंजुगणहयहर्षभोगिर्जकं श्वरीभिः ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ मूलमा

वसुधा क्वि मदाः वनः। दकि (घ) साक न हसु १३ र्धमाद नैस्म न ७॥ का कि कया ॥
 ॥ अविमामस्य दव स्य दकि (घ) मय व कथा ॥ पद्म मदा मू देवाम नाना वधु च
 नाम तः ॥ तं का ना यो। तं का गु नि ला या नि न द व या नाम लक्ष्म कथ (घ) ॥
 द्वाद म मास स्य नाना य ध धन ॥ सृजं गु गु न तान सित ता गु न ला या नि न द व द्य क थि
 नि सा या व रु ना वि पू र्ण साने ॥ ३४ ॥

द्वाद भवि व यानाम चिन्ता ॥
 भिक्त उमने उाव
 मकु रव्य क्कई ॥
 मरुभन । निवलादि को
 मरुदं व सिधल नय व
 कान् वृक्ष क गो द्र
 मि व वक्र गय
 वउय नि के मि के पाल
 रुग रव क्का इ कि
 मके विभु ले नोय
 गु यभक का नि गा न भा द
 को भन न नि मा ला
 नउ भन वी कि ॥
 धनि मसि २ मा न्ने



॥
मंत्रिमीयात्वास्वतिस्वाम् ॥

गुके ॥ १ ॥ युधाम ॥

इय ॥ २ ॥ द्विनाय ॥

मिनि ॥ ३ ॥ गृह्य ॥

गानि ॥ ४ ॥ वन्य ॥

यावो ॥ ५ ॥ वीर्य ॥

कुडा ॥ ६ ॥ वीर्य ॥

मीध ॥ ७ ॥ वीर्य ॥

आधा ॥ ८ ॥ वीर्य ॥

नडा ॥ ९ ॥ वीर्य ॥

दहा ॥ १० ॥ वीर्य ॥

वृकानरु ॥ ११ ॥ वीर्य ॥

वीनरु ॥ १२ ॥ वीर्य ॥

गोनरु ॥ १३ ॥ वीर्य ॥

वीनरु ॥ १४ ॥ वीर्य ॥

वीनरु ॥ १५ ॥ वीर्य ॥

मीरुस्त्रा ॥ १६ ॥ वीर्य ॥

सुगुरु ॥ १७ ॥ वीर्य ॥

अथमनरु ॥ १८ ॥ वीर्य ॥

उन्नम ॥ १९ ॥ वीर्य ॥

वीर्य ॥ २० ॥ वीर्य ॥

वृकस ॥ २१ ॥ वीर्य ॥

वायीम ॥ २२ ॥ वीर्य ॥

गोयीम ॥ २३ ॥ वीर्य ॥

वीर्यम ॥ २४ ॥ वीर्य ॥

वीर्यम ॥ २५ ॥ वीर्य ॥